OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 7

ब्रह्माकुमारी संस्थान की आधार स्तम्भ, पवित्रता की पराकाष्ठा से परिवर्तन को लाने वाला ये संगठन- ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वरिष्ठ दादियां बायें से दादी मनोहर इन्द्रा, दादी गंगे, दादी रतनमोहिनी, दादी हृदयमोहिनी(दादी गुल्ज़ार), दादी जानकी, दादी प्रकाशमणि, दादी निर्मलशांता, दादी चंद्रमणि।

बाबा का कहना... दादी का करना

जब संगठन में हम योग में बैठते हैं और एक ही संकल्प में स्थित होकर बैठते हैं तो वायुमण्डल कितना पावरफुल हो जाता है! जब सबका एक ही संकल्प हो और एक ही संकल्प में स्थित हों, तब ही वायुमण्डल को परिवर्तित कर सकेंगे।

बातें तो आयेंगी ही, बातों का काम है आना। लेकिन बाबा के बच्चों का काम है बनना। जो बाबा ने कहा, वह करना। कर्म तो करना ही पड़ता है, कर्म बिना तो नहीं रह सकेंगे ना! कर्म करते हुए भी एकदम शरीर के भान से परे हो जायें। हमने ब्रह्मा बाबा को देखा, बाबा सबकुछ करते थे, लेकिन बिल्कुल देहभान से परे होते थे, जो हमें फील होता था। हमें भी बाबा के समान बनना है ना!

ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा तो हमें वरदान देकर गये 'अशरीरी भवः'। साथ-साथ हमें शिक्षा भी दी कि कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी बनने का मतलब ही है कमल फूल समान बनकर रहना। देखो, कमल का फूल पानी व कीचड़ में रहता, फिर भी उससे न्यारा रहता, अलिप्त रहता। रहेगा पानी में, पर पानी की एक बूंद भी उसको स्पर्श नहीं करती। हमने ब्रह्मा बाबा को प्रैक्टिकल में देखा, बाबा शरीर में रहते भी शरीर के भान से न्यारे और प्यारे रहते थे। सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो तो आपका चेहरा और चलन दोनों से ही रूहानियत की खुशबू आयेगी। बाबा हमेशा उसे ही देखता है, जिसने, जो बाबा ने कहा, उसे स्वरूप में लाया। जो आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, उनका चेहरा हमेशा खिला हुआ होगा, खुश होगा, तो कितना अच्छा लगेगा! आपने खिला हुआ गुलाब का फूल देखा है ना! कितना सुंदर लगता है! तो बाबा के बच्चे भी वैसे ही गुलाब की तरह खिले हुए अच्छे लगेंगे ना! खिला हुआ चेहरा सबको अच्छा लगता है।

हमने ब्रह्मा बाबा को देखा, बाबा के सामने कितनी-कितनी बातें आती थीं, लेकिन बाबा का चेहरा हमेशा खुश रहता था। आई हुई बातों का प्रभाव चेहरे पर नहीं रहता था। बाबा हमेशा कहते थे- "मैं एक शिवबाबा का निमित्त बना हुआ बच्चा हूँ। बाबा ने मुझे निमित्त बनाया है। यह निमित्त मात्र मेरा शरीर रथ के रूप में लिया है। वर्सा तो शिवबाबा से ही मिलेगा, मेरे से नहीं।" ये ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी- निर्विकारी जीवन। बाबा ने जो हमें तीन शब्द दिये हैं, उन तीन शब्दों में सारा ज्ञान भरा हुआ है। ये याद रखेंगे तो विकार हमें छू भी नहीं पायेगा। बाबा हमेशा कहता था कि वर्सा तो शिव बाबा से ही मिलेगा, मेरा तो ये केवल निमित्त रथ है। बाबा में कभी भी 'मैं-पन' नहीं था। सदा न्यारा और प्यारा। न्यारा-प्यारा रहकर बच्चों की पालना भी की। परमात्मा ने रथ में प्रवेश होकर कार्य भी किया, तो कितनी न्यारी और प्यारी स्थिति थी बाबा की! बेफिकर, निर्वैर होकर रहते थे।

एक बार बाबा के लौकिक रिश्तेदार बाबा से मिलने आये। ब्रह्मा बाबा को कहा- 'आप मेरी एक छोटी-सी आश पूरी कर देंगे तो मैं सब कुछ अर्पण कर दूंगा। मेरे पास बहुत धन है। मैं सबकुछ आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा। बस, 'मुझे भगवान का साक्षात्कार करा दो। बाबा, आपके लिए क्या बड़ी बात है!' बाबा ने कहा- 'आपकी आश तो बहुत अच्छी है, लेकिन साक्षात्कार कराने की चाबी शिव बाबा के हाथ में है। दिव्य दृष्टि की चाबी हमें बाबा ने नहीं दी है। आप मान जाओ, मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है, वो तो परमात्मा के हाथ में है। ये सुनकर उनका सम्बंधी उन्हें घूर कर देखने लगा और कहने लगा कि बाबा, आपने तो सबकी आशायें पूर्ण की हैं, सबको साक्षात्कार कराया है और आप मुझे सीधे ही कह रहे हो कि मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है! तो बाबा कितने निर्मोही थे, ये हमने बाबा में प्रैक्टिकल में देखा। अहम का ज़रा भी अंश नहीं था। बाबा का ये जवाब सुनकर उनके सम्बंधी को बहुत आश्चर्य हुआ। ब्रह्मा बाबा ने, जो जवाब है वो साफ-साफ सुना दिया। पैसा क्या चीज़ है कर्मातीत के आगे! निर्मोही, नष्टोमोहा बनकर हमें आगे बढ़ना है चाहे कोई भी बात आवे। ऐसा नहीं कि बात नहीं आयेगी। माया छोड़ेगी थोड़े ही। लेकिन हमें सर्वशक्तिवान की शक्तियों को लेते रहना है और आगे बढ़ते रहना है, रुकना नहीं है। निर्मोही होकर रहना है।

बाबा ने हमें ये टाइटल दिया है, नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। इस स्थिति में यदि हम स्थित रहेंगे तो सबको न्यारे और प्यारे लगेंगे। बाबा ने हमें अधिकारी बनाया है। तो चेक करो, सारी दिनचर्या में हमें चेक करते रहना है। दिन में एक शब्द हमें सदा याद रहता है- वो शब्द है 'मेरा'। मेरा तो याद रहता है ना! तो आप याद करो 'मेरा कौन', बाबा। सिर्फ बाबा नहीं कहो, 'मेरा बाबा' कहो। तो मेरा तो याद रहेगा ना! दिन में बीच-बीच में 'मेरा' शब्द को याद करो। मेरा कौन, मेरा बाबा है ना!

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं सांसद रंजन भट्ट, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा, सह संचालिका ब्र.कु. पूनम, मीना बहन शैलेष भाई सोट्टा, बिंदिया शाह,डायरेक्टर,क्यूब कंसट्रक्शन, डॉ. मोना भट्ट,ऑनर,एच.सी.जी. कैंसर हॉस्पिटल, संगीता बहन,कॉर्पोरेटर, नरवीर सिंह,कॉर्पोरेटर तथा अन्य गणमान्य लोग।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए एयरपोर्ट डायरेक्टर आर्यमा सान्याल, ब्र.कु. हेमलता दीदी, म.प्र. कांग्रेस की उपाध्यक्षा अर्चना जायसवाल, आई.एम.ए. की सचिव साधना सोडानी, पंचम निषाद संगीत संस्थान की डायरेक्टर शोभा चौधरी, सनशाइन लॉयन क्लब की अध्यक्षा साधना सिंह, डॉ. श्लिपा देसाई, आनंद मूक बधिर संस्थान की डायरेक्टर मोनिका पुरोहित, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. उषा।